अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा
पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





कृषि संरचना
Agricultural Structure

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

कृषि संरचना **Agricultural Structure**

अध्याय शीर्षक	कृषि संरचना
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन / **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण / मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ / साभार / सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Agricultural Structure**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

कृषि संरचना **Agricultural Structure**

आर्थिक संरचना Economic Structure

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – कृषि संरचना का संक्षिप्त वर्णन

कृषि संरचना Agricultural Structure

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

कृषि

कृषि हेतु जलवायु/मौसम

बान्दा और आसपास चाहे वह बुन्देलखण्ड ही क्यों ना हो, मौसम बहुत ज्यादा अच्छा नहीं होता है। सर्दियों में बहुत ज्यादा सर्दी, गर्मी अपनी सीमा लांघदेती है और बरसात में अल्प समय में बहुत ज्यादा वर्षा या बिल्कुल भी नहीं, इसीलिए यहां पर वर्षा से सम्बन्धित बहुत सारी कहावतें उपलब्ध है जैसे–

उगे अगस्त, फूले बन कास, अब छोड़ो बरखा की आस',

यानी कि अगस्त तारे के निकलते ही कास फूलने लगे हैं, अतः अब वर्षा की आस छोड़ देनी चाहिए। यह कहावत 'महान कवि घाघ' की है। पुराने समय से मौसम सम्बन्धी सटीक कहावतों के लिये घाघ को जाना जाता है। महाकवि घाघ की कहावतों को मानें तो अब बारिश की आस छोड़ ही दे। लेकिन इस बरस(2023ई0) कान्स के फूल कुछ पहले खिल रहे हैं। बारिश हो रही है और कान्स फूल रहा है खूब। कहा जाता है–अगस्त्य तारा (कैनोपस) 7 सितम्बर को उदय होगा, और जनवरी से अप्रैल के बीच दक्षिण दिशा में दिखाई देता। पौराणिक कथा के अनुसार, इसके उदय होने के बाद समुद्र से वाष्पीकरण की प्रक्रिया शुरू होती है, जिससे बाद मानसून का आगमन बन्द होता है।

बोली लोखरि फूली कान्स, अब नाहिंन बरखा कै आस

अर्थात् यदि लोमड़ी बोलने लगे और कान्स के फूल खिल जाएं, तो समझ लेना चाहिए कि अब बारिश की कोई उम्मीद नहीं बची है। यह सूखे का सूचक है।

ये फूल आमतौर पर सितम्बर–अक्टूबर (शरद ऋतु) में खिलते हैं और मानसून की समाप्ति का सन्केत देते हैं।

कान्स जो अमावस्या के समय उखड़ी जाती है, फूल जाए, उस पर फूल आ जाए तो उसके पश्चात वर्षा का कोई भी अवसर नहीं है।

नौतपा कहावत

गर्मी में लू बहुत जरूरी है। तो एक प्रश्न उठता है क्यों? तो इसके बारे में एक बहुत अच्छी कहावत मशहूर है

दो मूसा, दो कातरा, दो तीड़ी, दो ताव।
दो की बादी जल हरै, दो विश्वर, दो वाय।।

नौतपा के पहले दो दिन लू ना चले तो चूहे बहुत हो जाएंगे। अगले दो दिन लू ना चली तो कातरा(फसल को नुकसान पहुंचाने वाला कीट,) बढ़ जाएंगे। तीसरे चौथे दिन से 2 दिन लू नहीं चली तो टिड्डियों के अंडे नष्ट नहीं होंगे। अगर 2 दिन नहीं तपे तो बुखार लाने वाले जीवाणु नहीं मरेंगे। इसके बाद दो दिन लू ना चले तो विश्वर यानी सांप बिच्छू नियंत्रण से बाहर हो जाएंगे। आखिरी दो दिन भी नहीं चली तो आंधियां अधिक चलेंगी और फसल चौपट कर देंगे।

वैसे बान्दा इलाके में 5 से 6 साल का एक चक्र है। इसके पश्चात 11 और 12 साल का दूसरा चक्र है, जिसमें पिछले 5–6 साल का जो चक्र था उससे ज्यादा सूखा पड़ता है। इसके पश्चात 50 से 70 साल के बीच सामान्यत 65 साल / 66 साल में एक चक्र आता है जिसमें भयन्कर सूखा पड़ता है और इस सूखे में लोग अपने सारे जानवरों को भूखा मरने के लिए छोड़ देते हैं क्योंकि उनके पास स्वयम् के भोजन के लिए कुछ भी नहीं होता और स्वयम्, सूख चुके पेड़ों के पत्तों को खाकर उबाल कर अपना काम चलाते हैं। इस तरह के सूखे को 1978–80 में देखा गया था यद्यपि इसके पश्चात भारत सरकार के द्वारा काफी कुछ सुविधाएं प्रदान की गई जिससे सूखे को ज्यादा महसूस नहीं किया जा रहा है। लेकिन खेती में उत्पन्न अनाज को देखते हुए सूखे का आगाज और एहसास किया जा सकता है।

कृषि संरचना **Agricultural Structure**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

बान्दा इलाके की जमीन कहीं बन्जर, कहीं उसर, कहीं उपजाऊ, कहीं रेगिस्तान तो कहीं घनघोर वन भी हैं।

सामान्यतः केवल तीन ही ऋतु होती हैं– सर्दी, गर्मी, वर्षा। जाड़े में बहुत ज्यादा रिकॉर्ड सर्दी, गर्मी में रिकॉर्ड गर्मी जिसमें तापमान घोषित रूप में 55/ 56 और अघोषित रूप में 62 63 डिग्री सेन्टीग्रेड तक पहुंच जाता है। वर्षा ऋतु पूर्णतया अनियमित है। 10 साल में केवल एक बार ही औसत वर्षा को प्राप्त कर पाता है बाकी एक आवृत्ति के तौर। पर जिस साल बहुत ज्यादा वर्षा होती है उसके अगले साल कुछ कम कुछ, उसके बाद फिर कुछ कम, उसके पश्चात फिर कुछ कम और पांचवें छठे साल में सबसे ज्यादा कम अर्थात सूखा पड़ जाता है, फिर तो वर्षा बढ़ती चली जाती हैं और दसवें साल सबसे ज्यादा वर्षा वह भी अनियमित। शायद ही कृषि के लिए कोई फायदा हो और 40–60 साल में पुनरावृत्ति होती है दो चक्र हैं 10 साल का और दूसरा 40–60 साल के चक्र में। 20वें में साल में घनघोर तबाही सूखे के कारण होती है। लोगों को अपना घर बार पशु छोड़ने पड़ते हैं और पुराने समय में तो महुआ की पत्तियां खाकर गुजारा करते रहे। वर्तमान 2021–22 में ऐसा होता तो है, लेकिन सरकार की सहायता के कारण लोगों को ज्यादा महसूस नहीं होती। किसानों को तो फिर भी सरकारी सहायता से काम चल जाता है।

बुन्देलखण्ड में प्राचीन सभ्यता के प्रतीक के रूप में अनेक नगरीय बस्तियां, दुर्ग, किले, गुफाएं, धार्मिक स्थल मौजूद हैं। यहां का धनी व्यक्ति अपने आर्थिक स्थिति के अनुसार आवास स्थलों का निर्माण कृषि उत्पादन के अनुसार कराता रहा है और निर्धन व्यक्ति झोपड़ी कुटिया और कच्चे मकानों में रहता रहा है और आज भी रह रहा है। सभी तरह के लोग यहां पर मौजूद हैं अर्थात तीनों गुण– सत, रज और तम, यहां के व्यक्तियों में विद्यमान हैं।

विश्व में लाखों तरह के जीव जन्तु हैं और सभी जीव जन्तु अपने अलग–अलग तरह की विशेषता रखते हैं और प्रकृति के उतार–चढ़ाव को अच्छी तरह समझते बोलते हैं। इसी श्रृन्खला में एक बहुत छोटा सा प्यारा सा जीव है जिसे वीर बहूटी कहते हैं यह सुर्ख लाल और मखमल की तरह का शर्मिला शाह जीव है। पूरा शरीर सुर्ख लाल रन्ग का होता है। मानसून की दस्तक या पहले वर्षा के साथ ही नदी तालाब खेतों के किनारे कुछ दिन ही दिखाई देता है और इसके बाद साल भर के लिए अदृश्य हो जाता है।

बहुत ज्यादा पेस्टिसाइड और अन्य जीव जन्तुओं को मारने के लिए उपयोग किए गए दवाइयां के कारण यह भी बहुत कम होता चला जा रहा है। जब भी यह वीर बहुटी नजर आती है तो लोग समझने लगते हैं कि वर्षा आने वाली है और यह किसानों को सचेत कर देता है कि खेती की तैयारी शुरू कर दी जाए। छोटे–छोटे बच्चे इस जीव को पकड़ कर खेलते हैं पकड़ने पर यह अपने पन्जे समेट लेता है और मरा हुआ दिखाने की कोशिश करता है लेकिन एक दो मिनट के बाद पूरे पन्जा खोलकर चलने लगता है वीर बहुटी पन्जे को समेट लेता है उस वक्त छोटे बच्चे खेलते हुए कहते हैं

वीर बहुत ही वीर बहुटी, चारों पन्जे खोल, तोहरे घर में चोर चोर।

<u>खेती से सम्बन्धित समस्याएं</u>

खेती से सम्बन्धित समस्याएं या कहें कि उसके दुश्मन हर जगह उपलब्ध हैं। गरीब वर्ग, सम्पन्न परिवारों से या सूदखोरों से खेत में बुवाई के लिए बीज "सवाई" पर लेता है। फसल आने पर जितना बीज लिया गया था उसका सवा गुना अर्थात 4 या 5 महीने में 25 प्रतिशत अधिक बीज वापस किया जाता है। अन्य आवश्यकताओं के लिए भी इसी तरह से उधार लिया जाता है। वर्तमान समय के अनुसार उस समय भी ऑर्गेनिक खेती हुआ करती थी– कारण रसायनिक खाद कीटनाशक उपलब्ध नहीं थे अतः जो कुछ भी पैदा होता था वह ऑर्गेनिक ही होता था और इस व्यवस्था में उपज बहुत कम होती है। जैसे बताया गया है कि फसल में हर स्तर पर फसल के दुश्मन हैं।

उदाहरण के तौर पर

1 बीज लेते वक्त सूदखोर,

2 बोने के बाद जमीन के कीड़े बीज खा लेते हैं

3 चिड़ियां हल्का सा भीगने के बाद खा लेती हैं,

4 उगने के बाद दूसरी तरह के पक्षी उनको चुनना शुरू कर देते हैं।

5 थोड़ा और बड़ा होने पर बड़े जानवर, जन्गली जानवर, सूअर, नीलगाय/रोज जन्गली भैंसे आवारा गाय भी

उनको चरना शुरु कर देती हैं।

6 छोटे–मोटे कीड़ो का लग जाना एक सामान्य बात है।

7 अतिवृष्टि या अल्पवृष्टि खेत को पूरी तरह से नुकसान पहुंचाती है।

8 फूल आने पर फूल वाले कीड़ो, कीट का लगना

9 फल आने पर उस पर अन्य तरह के कीड़ों का लगना, बड़े जानवरों का चरना, यह सभी अनाज के दुश्मन है।

10 असमय वर्षा वृष्टि, आंधी, तूफान, फसल के नुकसान देने वाले ही हैं।

11 इन सब चीजों से बचकर,

12 जब अनाज खलिहान में आ जाता है और खलिहान से घर तक जब तक नहीं पहुंच जाता तब गर्मी में शुरू होने वाली अन्धड़ ओलावृष्टि अच्छी तरह से तैयार फसल को बर्बाद करने में कोई कसर नहीं छोड़ते।

13 कष्टों से दूर व निवारण करते हुए, दूर होते हुए जब अनाज घर में आ जाता है तो घर में रहते ही बाहर एक सूदखोर नजर आने लगता है जो किसी ना किसी तरह से अपना उधार वापस लेने को तत्पर रहता है।

14 शहर के दुकानदार पर्दे के पीछे के सूदखोर होते हैं। फसल आने के समय फसल की कीमत को आधा कर देते हैं।

15 जैसे ही कष्ट पा रहा किसान अपनी आवश्यकता के लिए अनाज बेचने जाता है तो उसे केवल 80प्रतिशत अनाज का पैसा ही मिलता है।

16 अनाज खरीदने वाला आराम के लिए, छानन के लिए, पानी के लिए, मन्दिर के लिए, जो मजदूर वहां काम कर रहे हैं उनके लिए,

17 अगर मन्डी है तो मन्डी टैक्स के लिए और अन्य सुविधाओं के नाम पर काफी कुछ पैसा वसूल लिया जाता है और उसको केवल 80प्रतिशत अनाज का पैसा ही मिलता है।

18 अब वह भी अगर मिल जाए तो ठीक, नहीं तो उसे भी वह 15 दिन से लेकर 45 दिन के बीच में देता है। अर्थात वह अदृश्य सूदखोर उस अनाज को बेचेगा, बेचने के बाद अपना मुनाफा निकालने के बाद पैसा उस किसान को देगा लेकिन किसान इतने पर भी खुश है।

19 इतना सब कुछ होने के बाद जो खाली समय बचता है, उसमें वह रात में अलाव के चारों तरफ बैठकर खुश होने का प्रयत्न करता है।

1 बीज लेते वक्त सूदखोर,

2 बोने के बाद जमीन के कीड़े बीज खा लेते हैं

3 चिड़ियां हल्का सा भीगने के बाद खा लेती हैं,

4 उगने के बाद दूसरी तरह के पक्षी उनको चुनना शुरू कर देते हैं।

3 थोड़ा और बड़ा होने पर बड़े जानवर, जन्गली जानवर, सूअर, नीलगाय/रोज जन्गली भैंसे आवारा गाय भी उनको चरना शुरु कर देती हैं।

6 छोटे–मोटे कीड़ो का लग जाना एक सामान्य बात है।

7 अतिवृष्टि या अल्पवृष्टि खेत को पूरी तरह से नुकसान पहुंचाती है।

कृषि संरचना **Agricultural Structure**

8 फूल आने पर फूल वाले कीड़ो कीट का लगना

9 फल आने पर उस पर अन्य तरह के कीड़ों का लगना, बड़े जानवरों का चरना, यह सभी अनाज के दुश्मन है।

10 असमय वर्षा वृष्टि, आंधी, तूफान, फसल के नुकसान देने वाले ही हैं।

इन सब चीजों से बचकर,

8 जब अनाज खलिहान में आ जाता है और खलिहान से घर तक जब तक नहीं पहुंच जाता तब गर्मी में शुरू होने वाली अन्धड़ ओलावृष्टि अच्छी तरह से तैयार फसल को बर्बाद करने में कोई कसर नहीं छोड़ते।

9 कष्टों से दूर व निवारण करते हुए, दूर होते हुए जब अनाज घर में आ जाता है तो घर में रहते ही बाहर एक सूदखोर नजर आने लगता है जो किसी ना किसी तरह से अपना उधार वापस लेने को तत्पर रहता है।

10 शहर के दुकानदार पर्दे के पीछे के सूदखोर होते हैं। फसल आने के समय फसल की कीमत को आधा कर देते हैं।

11 जैसे ही कष्ट पा रहा किसान अपनी आवश्यकता के लिए अनाज बेचने जाता है तो उसे केवल 80प्रतिशत अनाज का पैसा ही मिलता है।

12 अनाज खरीदने वाला आराम के लिए, छानन के लिए, पानी के लिए, मन्दिर के लिए, जो मजदूर वहां काम कर रहे हैं उनके लिए,

13 अगर मन्डी है तो मन्डी टैक्स के लिए और अन्य सुविधाओं के नाम पर काफी कुछ पैसा वसूल लिया जाता है और उसको केवल 80प्रतिशत अनाज का पैसा ही मिलता है।

14 अब वह भी अगर मिल जाए तो ठीक, नहीं तो उसे भी वह 15 दिन से लेकर 45 दिन के बीच में देता है। अर्थात वह अदृश्य सूदखोर उस अनाज को बेचेगा, बेचने के बाद अपना मुनाफा निकालने के बाद पैसा उस किसान को देगा लेकिन किसान इतने पर भी खुश है।

15 इतना सब कुछ होने के बाद जो खाली समय बचता है, उसमें वह रात में अलाव के चारों तरफ बैठकर खुश होने का प्रयत्न करता है।

ज्वार, बाजरा, कोदो आदि मोटे अनाजों को अंग्रेजी में सम्मिलित रूप से मिलेट कहते हैं। ये सभी छोटे आकार के बीज वाली घासें हैं किन्तु विश्व भर में बहुत प्राचीन काल से इनकी अन्न के रूप में या चारे के रूप में खेती होती चली आयी है। इनमें से अधिकान्श प्रजातियाँ पैनिसी (Paniceae) समूह की हैं।

<u>मोटा अनाज</u>

1	**Barnyard Millet**	सान्वा / सामवा / सनवा / झन्गोरा	**Samwa /Jhangora**
2	**Brown Top Millet**	अन्डुआ / मकरा / कोरले	**Andua**
3	**Buckwheat**	कुट्टू	**Kuttu**
4	**Finger Millet**	रागी / मडुआ	**Ragi /Madua**
5	**Foxtail Millet**	काकुम / कन्गनी	**Kangni**
6	**Italian Millet**	इटालियन मिलेट	**Italian Millet**
7	**Japanese Millet**	जापानी बाजरा	**Japni Bajra**
8	**Kodo Millet**	कोदो / कोद्र	**Kodo/Kodra**
9	**Little Millet**	कुटकी / सामा	**Kutki**
10	**Pearl Millet**	बाजरा	**Bajra/ bairy**

कृषि संरचना **Agricultural Structure**

11	**Proso Millet**	चेना / बरी	**Chena/ cheena@barrey**
12	**Sorghum Millet**	ज्वार	**Jwar**
14	**Barley**	जौ	**Jau**
15	**Foxtail**	कन्गनी	
	Ref Millet Recipe_Book_Hi		

<u>वनोपज</u>

आम्वला, महुआ, चिरौंजी, गुड़मार पत्ती, नागर मोथा, बहेड़ा, मरोडफली, बेल, बेल गूदा तेन्दूपत्ता, शतावर, लाख, गोन्द शहद मोम जलाउ लकड़ी, जड़ी बूटी, लघु वनोंपजो का सन्ग्रहण कर जीविका उर्पाजन करते है।

बुन्देलखण्ड के बान्दा, चित्रकूट और ललितपुर जिले में कोल आदिवासियों की अच्छी खासी तादाद है और कोल समुदाय जन्गलों से जलाउ लकड़ी, जड़ी –बूटी आदि का सन्ग्रहण करते हैं। वनोपज जो छोटे मात्रा में है जिनको लघु वनोपज कहा जाएगा, बाजार में जाकर बेचते हैं लेकिन कोल आदिवासी समुदाय के लोगों को ध्यान में ना रखते हुए उनको ट्रान्सिट परमिट लागू किया गया। इसके पीछे सोच यह रही होगी कि जन्गलों को बड़े लोगों के द्वारा ज्यादा काटा–पीटा ना जाए, लेकिन बड़े लोगों पर लगाम लगाने की बजाय उन असहाय लोगों पर लगाम लगा दी गई जो एडमिनिस्ट्रेशन प्रशासनिक विभाग के विरुद्ध कुछ नहीं बोल पाए और वन विभाग के शोषण के लिए इन्हें खुला छूट दे दिया गया।

<u>जलवायु</u>

जिले की जलवायु में गर्म ग्रीष्मकाल, सुखद मानसून और ठन्ड के मौसम की विशेषता है। हालाँकि यहाँ मुख्य रूप से तीन मौसम हैं, अर्थात् गर्मी (मार्च–जून), बारिश (जुलाई से सितम्बर) और सर्दी (अक्टूबर–फरवरी), फिर भी अक्टूबर और नवम्बर के महीने अनिवार्य रूप से मध्यम तापमान वाले सन्क्रमणकालीन महीने हैं।

एक शताब्दी पहले की स्थिति आज से उल्लेखनीय रूप से भिन्न थी, जिसका विवरण नीचे दिया गया है

ग्रीष्म ऋतु के दौरान चलने वाली गर्म हवाओं की दो विशिष्टताएँ होती हैं

धूल–तूफानों का अभाव या अत्यन्त दुर्लभ होना ।

उस मौसम के अधिकान्श भाग के दौरान, विशेषकर दोपहर के समय, वातावरण की अत्यधिक शुद्धता और पारदर्शिता।

ठन्ड के मौसम में ठन्ड कम थी, नदियों के आस–पास की नम भूमि को छोड़कर बाकी जगह पाला पड़ा था।

उपरोक्त स्थिति अब काफी अलग है। इसका कारण पिछले कुछ दशकों में हुआ पर्यावरण असन्तुलन हो सकता है। अब गर्मियों में मौसम बहुत गर्म और सर्दियों में कड़ाके की ठन्ड है। बारिश और मानसून का कोई निश्चित आगमन नहीं है। इससे बान्दा जिले की कृषि बुरी तरह प्रभावित हुई है।

कृषि व मिट्टी

बान्दा जिले की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है। यहाँ की मिट्टी ज्यादातर उपजाऊ है और सिन्चाई की कई परियोजनाओं के बावजूद, जैसा कि पिछले पन्नों में देखा गया है, सिन्चाई की अनिश्चितता और बारिश पर निर्भरता ने इस क्षेत्र को ज़्यादातर पारम्परिक खेती अपनाने पर मजबूर कर दिया है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ सरकार द्वारा हाइब्रिड बीजों और व्यावसायिक कृषि पर जोर दिए जाने और कई सूखे और बाढ़ के बावजूद, जो बीजों को सबसे ज्यादा प्रभावित करते हैं, किसान अपने कुछ पारम्परिक बीजों को बचाने में सक्षम रहे हैं।

यहाँ दो मुख्य फसलें हैं

कृषि संरचना **Agricultural Structure**

खरीफ और रबी

खरीफ एक जुलाई से अक्टूबर के बीच तथा
रबी दूसरी नवम्बर से नवम्बर के बीच और मार्च।

शाही गजेटियर या जिला गजेटियर में पुराने अभिलेखों में कपास को यहाँ की प्रमुख फसलों में से एक बताया गया है। लेकिन अब यह लुप्त हो चुका है। यहां की मिट्टी को ब्लैक कॉटन सॉयल भी कहा जाता है।

वर्तमान में उगाई जाने वाली मुख्य फसलें इस प्रकार हैं।

खरीफ– धान, ज्वार, बाजरा, तिल, मूंग, उड़द, अरहर और सनई इन दिनों मुख्य फसलें हैं। धान को आमतौर पर एकल फसल के रूप में लिया जाता है जबकि अन्य मिश्रित फसलें जो असिन्चित होती हैं। 100 साल पहले खरीफ में अन्य फसलों के साथ कपास को मिश्रित फसल के रूप में लिया जाता था। वर्तमान में सरकार सभी खरीफ फसलों की जगह सोयाबीन को बढ़ावा दे रही है। यह प्रवृत्ति अन्ततः इस जिले को भूखा रखेगी।

रबी– गेहूं, जौ के साथ चना, अलसी, सरसों, मसूर और मटर प्रमुख फसलें हैं। भौगोलिक स्थिति और सिन्चाई की उपलब्धता के आधार पर फसलों के चयन में मिश्रित फसल और क्षेत्रीय विविधता की प्रवृत्ति है।

जायद– तीसरी फसल आमतौर पर नदी के किनारों पर उगाई जाती है; इसमें ककड़ी, तरबूज, खरबूजा और कुछ सब्जियां शामिल हैं।

सुन्दर फसल चक्र

फसल चक्र इतना सुन्दर कि विषम से विषम परिस्थितियों में साल भर परिवार को रोटी देने का ठेका खेत ही लेते थे। एक साल एक खेत में रबी तो दूसरे साल उस खेत में खरीफ। वह भी किसी भी फसल में एक जिन्स कभी नहीं बोई जाती थी। कम से कम तीन जिन्स मिलाकर बोते थे। यदि एक धोखा देगी तो दूसरी काम चला देगी। और यदि तीनों फसल साथ दे गयीं तो किसान और उसके मजदूरी दोनों की ही एक एक बेटी की शादी निपट ही गयी। जायद की फसल नदी अथवा तालाब के किनारे और नदियों के रेत में लेकिन यह खेती केवल जल जीवी जातियां करेंगी। दूसरी जाति के किसी व्यक्ति ने यह खेती की तो समझिए कि उसका कथित सामाजिक स्तर गिर गया।

मजबूत सामाजिक व्यवस्था

सामाजिक व्यवस्थाएं इतनी व्यवस्थित और मजबूत थी कि यदि खेत में थोड़ा भी पैदा हुआ तो आदमी तो क्या गांव में कुत्ते, बिल्ली, पशु पक्षी भी भूखा न सोए। हुनर वाली जातियां लोहार, बढ़ई, कुम्हार, तमोली, कहार, चमार, डोमार सभी का खेती की पैदावार में हिस्सेदारी थी। जब किसान का घर अमीर तब इनका भी अमीरी और जब किसान का घर गरीब तब इनकी भी गरीबी।

बाजार भी गांव की इस सामाजिक व्यवस्था से नियंत्रित था जो वस्तु गांव में उपलब्ध है तथा जो गांव के लिए लाभकारी नहीं है क्या मजाल कि बड़ा से बड़ा सेठ और साहूकार उन वस्तुओं को बाहर से लाकर गांव में बेच सके।

कृषि खर्च

1	कार्य		रेट	बीघा के लिए	प्रति बीघा	प्रति हेक्टे
2	बक्खर मई		800	4.5	177.8	1013
3	बक्खर वर्षा के बाद		800	4.5	177.8	1013
4	जुताई वर्षा के बाद		800	4.5	177.8	1013
5	बुआई क्वार नवदुर्गा पर		800	3.5	228.6	1303

कृषि संरचना Agricultural Structure

6	बीज फसल के अनुसार औसत		5000	1	5000	28500
7	बीज प्रसन्स्करण		500	1	500	2850
8	सिचाई पम्प किराया		300	1	300	300
9	सिचाई 5ली डीजल रू500 मजदूरी 300		800	1	800	4560
10	दवा कीट मेनेजमेन्ट बडा होने पर, फूल व फल आने पर		1000	4	250	1425
11	ट्रैक्टररू400 दवा छिडकाव का 200ली ड्रम खेत लाना वापस लाना 2 ट्रिप		800			800
12	मजदूर रू400 छिडकाव भोजनरु200 1 दिन		600			600
13	पहरेदारी –मोटरसाइकिल 1ली पेटोल रु100 मजदूरी रु300 रु5ह प्रति माह 3महीने		400	120	50000	50000
14	निराई					
15	कटाइया लाना	1	5000			5000
16	कटाइया वापस	1	6000			6000
17	गहाई थ्रेसर 5मजदूर रू400	5	400			2000
18						
19	अनाज को लादना व घर पर रखना 2मजदूर रू400	2	400			800
20	मजदूररू400 अनाज को लादना घर से बाजार ले जाना		400			400
21	ट्रैक्टर भाडा रू700 अनाज को लादना घर से बाजार ले जाना		700			700
22	कुल खर्च प्रति हेक्ट					108278
23	कटैया परसेन्ट में	5				
24	गहाई थ्रेसर, घर पर लाना परसेन्ट में	4				
25	मन्डी बया दलाल परसेन्ट में	2॰8				
26	कुल 12 प्रतिशत हानि					
27	पैदावार औसत क्विन्टल माइनस कटैया गहाइ					
28	मसूर	1.3	1.5	6000	9000	51300
29	चना	1.4	2.5	5700	14250	81225
30	गेहूं	10	10	2450	24500	139650
31	गंहू असिचित कठिया	4.6	5	2500	12500	71250
32	सरसों	2	2	5900	11800	67260
33	अलसी	1	1	4600	4600	26220
34	मटर/मटर हरा	2.3	2.5	3500	8750	49875
35	अरहर	1.2	1.5	5800	8700	49590

1	कार्य		रेट	बीघा के लिए	प्रति बीघा	प्रति हेक्टे
2	बक्खर मई में स्वयम् व ट्रैक्टर		0	4.5	0.0	0
3	बक्खर वर्षा के बाद			4.5	0.0	0
4	जुताई वर्षा के बाद			4.5	0.0	0
5	बुआई क्वार नवदुर्गा पर		0	3.5	0.0	0
6	बीज फसल के अनुसार औसत		5000	1	5000	28500
7	बीज प्रसन्स्करण		500	1	500	2850
8	सिचाई पम्प किराया			1	0	
9	सिचाई नहीं			1	0	0
10	दवा कीट मेनेजमेन्ट बडा होने पर, फूल व फल आने पर		1000	4	250	1425

11	ट्रैक्टररू400 दवा छिडकाव का 200ली ड्रम खेत लाना वापस लाना 2 ट्रिप					
12	मजदूर रू400 छिडकाव भोजनरु200 1 दिन		600			600
13	पहरेदारी –मोटरसाइकिल 1ली पेटोल रु100 रु3ह प्रति माह 3महीने स्वयम्		100	120	12000	12000
14	निराई					
15	कटाइया लाना	1	5000			
16	कटाइया वापस	1	6000			
17	गहाई थ्रेसर 5मजदूर रू400	5	400			
18	गहाई थ्रेसर, घर पर लाना परसेन्ट में					
19	अनाज को लादना व घर पर रखना 2मजदूर रू400	2	400			800
20	मजदूररू400 अनाज को लादना घर से बाजार ले जाना	1 क्ंल	400			400
21	ट्रैक्टर भाडा रू700 अनाज को लादना घर से बाजार ले जाना स्वयम्		700			
22	कुल खर्च प्रति हेक्ट					46575
23	कटैया परसेन्ट में	5				
24	गहाई थ्रेसर, घर पर लाना परसेन्ट में	4				
25	मन्डी बया दलाल परसेन्ट में	2॰75				
26	कुल 12 प्रतिशत हानि					
27	पैदावार औसत क्विन्टल माइनस कटैया गहाइ					
28	मसूर	1.3	1.5	6000	9000	51300
29	चना	1.4	2.5	5700	14250	81225
30	गेहूं	10	10	2450	24500	139650
31	गंहू असिचित कठिया	4.6	5	2500	12500	71250
32	सरसों	2	2	5900	11800	67260
33	अलसी	1	1	4600	4600	26220
34	मटर/मटर हरा	2.3	2.5	3500	8750	49875
35	अरहर	1.2	1.5	5800	8700	49590
36						
37	बीज खर्च		किग्रा प्र बीज	रेट	खर्च प्रति बीघा	खर्च प्रति हेक्ट
38	मसूर		11	12000	1320	7603.2
39	चना		20	12000	2400	13824
40	गेहूं		30	4500	1350	7776
41	गंहू असिचित		20	4500	900	5184
42	सरसों		1	8000	80	460.8
43	अलसी		3	7000	210	1209.6
44	मटर/मटर हरा		20	6500	1300	7488
45	अरहर		3	12000	360	2073.6
46						45619.2
47						5702॰4

<u>तबाही की शुरूआत</u>

कृषि संरचना Agricultural Structure

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

बुन्देलखण्ड सृष्टिकाल से ही अपनी परिस्थितिकीय तथा भूगर्भीय सम्पदा के लिए जाना जाता रहा है। यहां की इस सम्पदा से ललचाकर हमेशा ही देश के बाहर से तथा देश के अन्दर के भी शासकों ने यहां लूटपाट के लिए आक्रमण करते रहे हैं। यदि विदेशी लुटेरे लूट कर अपने देश वापस चले गए तब भी कोई खास बात नहीं लेकिन यदि लूटपाट के बाद वह यही देश में ही रूककर शासन करने लगे तब तो उन्होंने बुन्देलखण्ड से चुन–चुनकर बदले लिए।

बुन्देलखण्ड प्राकृतिक सम्पदा के साथ ही साथ अपने स्वाभिमान, लड़ाकूपन और कम से कम सन्साधनो में जीकर अपनी प्राकृतिक सम्पदा तथा आन–मान–सान की रक्षा में सन्घर्ष के लिए भी विख्यात रहे है। यही कारण है कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी के दमन के खिलाफ बुन्देलखण्ड ने 1856 में आजादी के लिए सन्घर्ष छेड दिया था। यही कारण है कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी के बाद जब वर्तानिया क्राउन ने गद्दी सम्भाली तो उसने यहां को तबाह करने में कसर नहीं छोड़ी।

चूकि शासक विदेशी था अतः लोगों ने सम्भल–सम्भल कर अपने गॉव परिवार उनकी आन–बान अपनी प्राकृतिक सम्पदा तथा प्राकृतिक सम्पदा की रक्षा करने वाली परम्पराओं प्रथाओं की भी किसी तरह से रक्षा कर ली थी। लेकिन ब्रिटानिया शासन के खात्मे के बाद तो बुन्देले स्वदेशी सरकार के मुरीद हो गयें। बुन्देलों ने सब कुछ अपनी सरकार कहें जाने वाले शासकों के हवाले कर दिया।

देश को आजादी मिलने के बाद तो हमारे देशी शासकों ने विकास के नाम पर जो नीतियां बनाई उन्होने यहां की आजीविका तथा पर्यावरण सन्रक्षण की सारी परम्पराओं प्रथाओं को ही नही बल्कि बुन्देलखण्ड के सहजीवन और सहअस्तित्व पर आधारित समाज की जडो को भी हमेशा – हमेशा के लिए नष्ट कर दिया।

विकास की सरकारी नीतियां

व्यक्तिवादी विकास की नीतियों ने यहां की सन्युक्त परिवार प्रणाली को ही नष्ट कर दिया है। सन्युक्त परिवार के विखण्डन के कारण यहां कृषि जोत तथा खेतों के जोत का आकार अत्यन्त छोटा हो गया। खेती करने के मायने केवल खेत जोतना, बोना और काटना मात्र रह गया। पशुपालन तथा कृषि आधारित कुटीर उद्योग समूल नष्ट हो गए।

जोत का आकार छोटा होता देख हमारी सरकार ने चकबन्दी प्रणाली शुरू की जिसने घर–घर रिश्वत का प्रचलन पैदा किया। समाज एक दम विखण्डित हो गया। पेड़ों की मजाकिया लागत लगने के कारण खेतों में एक भी पेड़ खड़ा नही रह पाया। खेतो के चारो तरफ ऊँची चौड़ी मेडों को तोड़ डालने के लिए किसान मजबूर हो गया जो मेड़े खेतों में महीनो पानी भरे रहने तथा भूगर्भ जल सन्रक्षण में मदद करती थी। कम्पनियो और बाजार के दबाव में हमारे शासको ने कृषि नीति बनाई जिसने हमारे पारम्परिक बीजों और पारम्परिक कृषि तकनीक का सफाया हो गया जो दैवी आपदाओं के समय भी यहां के लिए वरदान साबित होते रहे है।

औसत वर्षा

आद्रता सन्कट– बाढ़ और सूखा के पदचाप अब तो सबको सुनाई दे जाते हैं लेकिन क्षेत्र में आद्रता दर की गिरावट की किसी को खबर नहीं है जो हमारी फसलों के बरबाद होने का एक कारण तो है ही साथ ही यहां के लोगों को पालतू जन्गली पशुओं के स्वास्थ्य और स्वाभाव में भी जबरजस्त रूप से प्रभाव डालता है।

यहां फरवरी और मार्च में आद्रता दर मात्र 14 से 21 रह जाती है जो यहां की प्रमुख फसल रवी में पौधों में दानों पड़ने का समय फरवरी मार्च का ही होता है उस समय वातावरण में आद्रता की कमी मिट्टी और हवा दोनों की ही नमी सुखा देती है जिससे फसले अपरिपक्व अवस्था में पक जाती है। फसलें देखने में तो खूब अच्छी लगती है लेकिन पैदावार बिल्कुल नहीं होती।

फिर भी जिन्दा रहने की कोशिश में यहां के किसानो ने पहले तो घर में जमीन के अन्दर गडे धन को खोद कर बेचा काम चलाया, फिर खेत बेचा, देश के कोने कोने में भटक कर मेहनत मजदूरी से अपने बीवी बच्चो का पेट चलाया, अब वहॉ भी गुन्जायश नही तो सरकारी गैर सरकरी कर्ज लिए। लेकिन अब कर्जे की अदायगी और पेट की भूख के कारण किसान को सस्ता सरल आसान तरीका मिल गया है आत्महत्या!।

आर्थिक असमानता

कृषि संरचना Agricultural Structure

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

पूरी तहसील में आर्थिक असमानता उच्च स्तर पर है। यहां पर या तो अत्यन्त गरीब हैं या फिर अत्यन्त अमीर हैं। सिन्चाई ने भी इसमें कुछ महत्वपूर्ण रोल अदा किया था।

1905 ईस्वी में खेती करने वाली जातियों में ब्राह्मण, राजपूत, अहीर और काछी हैं। लेकिन गड़रिया, चमार, केवट, कोरी और लोध भी जमीन का विचारणीय और पर्याप्त हिस्सा सम्भाले हुए हैं। 49 प्रतिशत जमीन मारुसि काश्तकारों के पास है। (टेनेंट एट विल –मारुसि हकदार, वसीयत में किराएदार) 18 प्रतिशत जमीन बटाईदार / किरायेदारों के कब्जे में हैं व शेष 31 प्रतिशत जमीन खुद जमीदारों के पास है। बान्दा तहसील में (1900 ईस्वी में) 122 गांव हैं और 312 महलों में विभाजित हैं। 70 एकल जमीदारी में हैं, 80 सन्युक्त जमीदारी, 70 पूरे पट्टेदारी, व 83 कच्ची पट्टेदारी में हैं और 9 भाईचारा में है।

ब्राह्मणों के पास 44.79 प्रतिशत, राजपूतों के पास 31.42 प्रतिशत, बनियों के पास 6.03 प्रतिशत, कायस्थों के पास 2.8 प्रतिशत, मुसलमानों के पास 8 प्रतिशत जमीन है।

<u>खण्डेह के दुबे</u>

खण्डेह के दुबे पुरातन में सबसे बड़े जमीदार थे। बड़े जमीदार कम ही हैं।

जनसन्ख्या

जनसन्ख्या–1901 ईस्वी में कुल जनसन्ख्या 98,574 थी, जिनमें 49,178 स्त्रियों की सन्ख्या थी। 1881 ईस्वी में जनसन्ख्या 1,20,758 जो 1901 ईस्वी तक आते आते 18.28 प्रतिशत कम हो गई। इस तरह जनसन्ख्या घनत्व 231 व्यक्ति प्रति वर्ग मील थी जो बहुत कम है। जबकि इसमें बान्दा शहर की भी जनसन्ख्या शामिल है। अन्य तहसीलें भी अनियमित जनसन्ख्या से परिपूर्ण है।

धर्म के अनुसार जन सन्ख्या निम्न है।

88,382	हिंदू
9,764	मुस्लिम
263	जैन
104	क्रिश्चियन्स
56	आर्य
5	सिख

जाति के अनुसार (1901 ईस्वी में) चमार सबसे ज्यादा 13,158 है। ब्राह्मण और राजपूत लगभग बराबर है (9816 व 9656 क्रमशः) 7,639 अहीर, 4,915 काछी, 4091 कोरी है।

आरख, गडरिया, कायस्थ, कुम्हार, केवट, कहार, लोध, तेली –सभी 2000 से कुछ कम कुछ ज्यादा है।

राजपूतों कीएक तिहाई जनसन्ख्या बैस(ठ ।ै) ही है। दिखित(क्ज्ञभ्प्ज) उनके बाद आते हैं इसके बाद रघुवंशी, गौतम, गौर और परिहार आते हैं।

बान्दा तहसील की प्रकृति

बान्दा तहसील की प्रकृति मुख्यतः खेती ही है। यहां तक बान्दा शहर ही एक ही एक छोटा व्यापारिक व व्यवसायिक केंद्र है और वह भी बिना किसी औद्योगिक सन्स्थानों के अर्थात यहां पर कोई औद्योगिक सन्स्थान नहीं है।

पशुपालक और पशु चराने वाले किसी अन्य तहसील के अनुपात में सर्वाधिक हैं। यह सब केन के साथ–साथ बहुत अधिक फैले हुए हैं। बैल व सान्डों की कनवारिया ब्रीड /नस्ल बहुत फली फूली और वर्तमान 2020 में ईस्वी में यह नस्ल नष्ट प्राय अर्थात् समाप्त हो चुकी है। शहर में घर का कार्य करने वाले, कहार (पानी भरने वाले), धोबी और इसी तरह के अन्य काम करने वाले, यहां पर आबादी के अनुपात में आवश्यकता से अधिक उपलब्ध हैं और कार्यरत है। बुनकर व मजदूर भी बहुत बड़ी सन्ख्या में हैं क्योंकि यह आबादी कोई अन्य कार्य करना ही नहीं चाहती।

कृषि संरचना Agricultural Structure

कृषि संरचना **Agricultural Structure**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

सन्दर्भ सौजन्य साभार
बान्दा हिस्ट्री वैरायटी ऑफ़ ग्रैंड
बान्दा हिस्ट्री वनोपज फाइल
+1 बान्दा हिस्ट्री सूखा श्वेतपत्र
बान्दा गजेटियर 1909

कृषि संरचना **Agricultural Structure**